इ
का
ई

3 मानवीय अनुभूतियाँ

इस इकाई में मानव जीवन के अनुभव, मानवीय भावनाएँ जैसे प्रेम, करुणा त्याग, सहृदयता, सहानुभूति आदि से विद्यार्थियों को अनुभव कराने का प्रयास किया गया है। उम्मीद यह भी है कि इसमें शामिल साहित्य की विविध विधाएँ, मानवीय अनुभूतियों से उपजे मूल्यों, मूल्यों के संक्रमण, उनमें टकराव, अंतर्द्वंद्व जैसे भावबोधों को समझने, उन्हें महसूस करने को प्रोत्साहित करेंगी। जिससे इन मनोभावों से गुजरते हुए एक सहज– सरल व्यक्ति के रूप में विद्यार्थियों का विकास हो सके और इस प्रकार के साहित्य को पढ़ने, समझने, रचने और चुनाव करने के प्रति रुचियों का विकास कर पाएँ।

इकाई की पहली रचना 'माटीवाली' एक कहानी है। इस कहानी में विस्थापन की समस्या से उपजी पीड़ा व प्रताड़ना को प्रभावशाली तरीके से रखा गया है। जीवकोपार्जन के लिए घर–घर माटी पहुँचाने को विवश वृद्ध स्त्री गरीबी से संघर्ष करते हुए अपनी संवेदनशीलता का परिचय पूरी कहानी में देती ही है, गृहस्थी के बोध और बोझ को भी समझती है। पति की मृत्यु उस संघर्षशील वृद्ध स्त्री को उतना नहीं तोड़ती, जितना यह जवाब कि "बुढ़िया मुझे जमीन का कागज चाहिए रोजी का नहीं" और "बाँध बनने के बाद मैं खाऊँगी क्या साब।" पूरी कहानी में यह मार्मिकता अपने चरम रूप में दिखती है जो संवेदनशील मन को कचोटने वाली है, जब वह कर्मशील वृद्ध स्त्री यह कहती है "गरीब आदमी का श्मशान नहीं उजड़ना चाहिए।"

ऋतुराज की कविता 'कन्यादान" समाज में स्त्रियों के लिए नियत किए गए परम्परागत मान्यताओं के प्रति विरोध का स्वर उठाती है। इसमें एक माँ अपनी बेटी को यह बताती है कि स्त्रियों को सुन्दरता के आवरण और भुलावे में बाँध कर समाज उसकी कमजोरी का उपहास करता है और उपयोग भी। माँ अपने दीर्घ जीवन–अनुभवों

से संचित पीड़ा, उपेक्षा और उपयोग के आधार पर अपनी बेटी को आगाह करती है कि वह नए जीवन में प्रवेश करते हुए कोमलता से भ्रमित और कमजोर होने के बजाय जीवन के यथार्थ को समझे और मजबूती से उनका सामना कर पाए।

जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी 'पुरस्कार' उत्कट प्रेम को अभिव्यक्त करने वाली एक सशक्त रचना है। इसमें नायिका मधुलिका के माध्यम से नारी के प्रेम जनित अंतर्द्वंद, कर्तव्य और भावनाओं के टकराव और उत्कष्ट राष्ट्र–प्रेम को व्यक्त किया गया है। मधुलिका जहाँ एक ओर प्रेम की पूर्णता के लिए अपने प्रियतम अरुण के साथ अपने जीवन का भी बलिदान देने को प्रस्तुत हो जाती है वहीं दूसरी ओर राष्ट्र के प्रति अपने उत्कट प्रेम को वैयक्तिक प्रेम पर न्यौछावर कर देती है। यह भावना पाठक के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ जाती है और पाठ को बार–बार पढ़ने व संदर्भ को समझने की अपेक्षा करती है।

छायावादी चतुष्टयी की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी के गद्य अपनी संवेदनशीलता और मार्मिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ प्रस्तुत 'घीसा' एक चर्चित रेखाचित्र है ,जिसमें महादेवी का एक संवेदनशील और सहज सा अध्यापकीय व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है। इसमें वंचित समाज के पितृविहीन और कुपोषित शिष्य 'घीसा 'और गुरु 'महादेवी' के रागात्मक सबंधों के एहसास को देखा जा सकता है। घीसा के जीवन में सुधार और उमंग के भाव एक साथ दिखाई देते हैं, जो अल्पकालिक साबित होते हैं। पेड़ के नीचे लगनेवाली पाठशाला को लीपना, झाड़ना–बुहारना, गुरु जी के आने की राह तकना, खुद को साफ –सुथरा रखना, उनके आदेशों का समुचित निर्वहन, उन्हें भी कुछ देने की प्रबल इच्छा और साहस आदि ऐसे संदर्भ हैं जो संबंधों की भावविह्वलता की कहानी को जीवंत रूप में कहते हैं जिसे महादेवी इस रचना की शुरुआत में मार्मिक रूप में इस प्रकार रखती हैं –"वर्तमान की कौन सी अज्ञात प्रेरणा हमारे अतीत की किसी भूली हुई कथा को सम्पूर्ण मार्मिकता के साथ दोहरा जाती है, यह जान लेना सहज होता तो मैं भी आज गाँव के उस मलिन सहमें नन्हें से विद्यार्थी की सहसा याद आ जाने का कारण बता सकती, जो एक छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन –तट को अपनी सारी आर्द्रता से छूकर अनंत जल राशि में विलीन हो गया।''